हिंदी–आधार (कोड सं. 302) अभ्यास प्रश्न पत्र–2 (हल सहित)

खंड-अ

1.

1. (द) उपर्युक्त सभी
2. (स) शीलवान
3. (द) शील
4. (ब) जिसमें शील का अभाव हो
5. (द) उपर्युक्त सभी के लिए
6. (द) कार्यकुशलता में वृद्धि और मधुर एवं प्रगाढ़ संबंध स्थापित होते हैं
7. (द) स्वयं की और पारिवारिक संस्कार की
8. (द) उपर्युक्त सभी से
9. (स) मनुष्य की प्रकृति और व्यक्तित्व
10. (द) उपर्युक्त सभी

2.

1. (अ) 'रोने से दुर्भाग्य सौभाग्य में नहीं बदल जाता'
2. (स) कमजोर व्यवस्था को
3. (द) उपर्युक्त सभी
4. (अ) अच्छे दिन सदैव नहीं रहते
5. (ब) वीरों के गीतों को

अथवा

1. (ब) अरविन्द से
2. (अ) पुनरावृत्ति भावों पर जोर देने हेतु
3. (स) 'तृप्ति' का
4. (द) बालक को खेलता, सोता, रोता–हँसता देखकर
5. (अ) वात्सल्य

3.

1. (स) संपादकीय
2. (अ) डीकोडिंग
3. (द) छः
4. (द) प्राप्तकर्ता
5. (अ) तीन या चार

4.

1. (स) हनुमानजी और भरत जी के बीच
2. (अ) संजीवनी बूंटी
3. (स) राम भक्ति से
4. (ब) आपका
5. (स) तुलसी

5. **1.** (स) पेड़ के नीचे बैठकर
2. (ब) गर्मी में भी खिला रहता है।
3. (अ) 10–15 दिन खिलने वाले फूल
4. (स) वसंत ऋतु से भादों तक
5. (अ) शिरीष के फूल

6. **1.** (अ) 50 हजार से अधिक
2. (ब) काला
3. (स) अपने बच्चों का
4. (स) मंत्री
5. (ब) गुस्सैल और हिंसक
6. (अ) कृष्णा नन्द पाण्डेय
7. (ब) अधिक पैसे मिलने के प्रलोभन में
8. (अ) वसंत पाटिल
9. (द) ऊनी ड्रेसिंग गाउन
10. (ब) आनंद यादव

खंड-ब

7. **(अ)** आधुनिकता एक विचारधारा है। पुराने से स्वयं को अलग करके नए विचार व दिशा बनाना ही आधुनिकता है। हम आधुनिक युग उस समय से प्रारंभ करते हैं जब दुनिया में शासन व जीवन में नए स्वरूप का प्रादुर्भाव हुआ। नई जीवन–व्यवस्था प्रारंभ हुई। इस प्रकार से समाज का क्रमिक विकास हुआ। किसी भी समाज के विकास में नर–नारी का समान योगदान होता है। प्राचीन काल में मातृसत्तात्मक व्यवस्था थी। धीरे–धीरे राजवंशों का प्रचलन हुआ और नारी का महत्व घटने लगा। मध्यकाल में नारी की स्थिति और गिर गई।

सामंतवादी संस्कृति ने नारी को मात्र भोग्या बना दिया। वह पुरुष की विलास–सामग्री बन गई और चारदीवारी में कैद कर दी गई। हालाँकि आधुनिक युग की शुरुआत से जीवन के हर क्षेत्र में परिवर्तन आ गया। नारी की स्थिति सुधारने के लिए प्रयास किए जाने लगे। भारत में समाज–सुधारकों ने सती–प्रथा, शिशु–हत्या प्रथा आदि कुप्रथाओं का डटकर विरोध किया। स्त्री–शिक्षा व विधवा–विवाह के प्रोत्साहन के लिए सरकारी व गैर–सरकारी प्रयास किए गए। नारी–सुधार आंदोलन शुरू हुए।

आजादी मिलने के बाद देश में लोकतंत्र स्थापित हुआ। नए शासन में स्त्रियों को पुरुष के बराबर का दर्जा दिया गया। सैद्धांतिक व कानूनी तौर पर नारी को वे समस्त अधिकार प्राप्त हो गए जो पुरुष को उपलब्ध हैं। सच्चे अर्थों में इन समस्त अधिकारों का उपभोग करने वाली, वर्तमान जीवन की चेतना से पूर्णतरू अनुरंजित नारी का नाम ही आधुनिक नारी है। आधुनिक नारी का अर्थ, रूप व सौंदर्य से संपन्न नारी से कतई नहीं है। यद्यपि भारत में विकास के चाहे कितने ही दावे किए जाएँ तथापि आज भी वास्तविकता यह है कि स्त्रियों को बराबरी का अधिकार नहीं दिया गया है। हालाँकि अब समय के साथ–साथ वैश्विक पटल पर स्थिति में परिवर्तन आ रहा है।

इस परिवर्तन में नारी को दो स्तरों पर संघर्ष करना पड़ता है। पहला समाज नारी को परंपरागत दृष्टिकोण से देखता है। इस संघर्ष में नारी कुछ हद तक दिग्भ्रमित हो चुकी है। वह आधुनिकता के नाम पर उच्छंखलता को ग्रहण कर रही है। भारतीय नारी को चाहिए कि वह समाज की श्रेष्ठ जीवनोपयोगी परंपराओं को स्वीकार करे तथा पश्चिम के अंधानुकरण से बचे। नारी के समक्ष दूसरा संघर्ष क्रियात्मक है। पुरुष नारी पर अपना अधिकार समझता है। सैद्धांतिक तौर पर वह नारी की स्वतंत्रता का हिमायती है, परंतु व्यावहारिक स्तर पर इसे प्रदान करने में हिचकता है।

उच्च व शिक्षित वर्ग में भी इस कारण संघर्ष रहता है। इस बात का उदाहरण महिला आरक्षण विधेयक है। सभी राजनीतिक दल इसे लागू करने का विरोध कर रहे हैं। सामान्य बुद्धिस्तर के समुदाय के बीच आज भी नारी जटिल परिस्थितियों में जीवन व्यतीत कर रही है। नारी–मुक्ति का प्रमुख आधार है, उसका आर्थिक रूप से स्वावलंबी होना। जब नारी आर्थिक रूप से समर्थ होगी तब उसे निर्णय करने का अधिकार मिलेगा। कभी–कभी नौकरी भी उसे परिवार में प्रमुख स्थान नहीं दिला पाती। बाहर निकलने पर नारी को स्थान–स्थान पर बाधाएँ झेलनी पड़ती हैं। बुरे लोगों के संपर्क में पड़कर वह पतन के गर्त में चली जाती है। नारी को इस स्थिति में सँभलकर रहना चाहिए। उन्हें समझना होगा कि जिस प्रकार उच्च शिक्षा, गंभीर चिंतन व श्रेष्ठ आचरण आदर्श पुरुष के सनातन लक्षण हैं, उसी प्रकार नारी के भी। नारी को इन गुणों को आधुनिक संदर्भों में विकसित करना होगा।

(ब) फिल्में आधुनिक जीवन में मनोरंजन का सर्वोत्तम साधन हैं। ये समाज के एक बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित करती हैं। फिल्मों में कलाकारों के अभिनय को लोग अपने जीवन में उतारने की कोशिश करते हैं। इस दृष्टि से फिल्मों का सामाजिक दायित्व भी बनता है। वे केवल मनोरंजन का ही नहीं, अपितु सामाजिक बुराइयों को दूर करने का भी साधन हैं। फिल्में समाज में व्याप्त विभिन्न बुराइयों को दूर करके स्वस्थ वातावरण के निर्माण में सहायता करती हैं। हालाँकि समाज में रहते हुए हमें इन बुराइयों की भयानकता का पता नहीं चलता। फिल्म देखकर इनकी बुराइयों से हम दो–चार होते हैं।

उदाहरणस्वरूप 'प्यासा' और 'प्रभात' जैसी फिल्मों को देखकर अनेक नारियों ने वेश्यावृत्ति त्यागकर स्वस्थ जीवन जीना शुरू किया। 'पा' फिल्म असमय वृद्ध होने वाले बच्चों की कठिनाइयों को दर्शाती है। इसी प्रकार से फिल्में समाज का सूक्ष्म इतिहास प्रकट करती हैं। इतिहासकार जहाँ इतिहास की स्थूल घटनाओं को शब्दबद्ध करता है, वहाँ फिल्में व्यक्ति के मन में छिपे उल्लास और पीड़ा की भावना को व्यक्त करती हैं। 'गदर' फिल्म में भारत–पाक युद्ध तथा 1971 की प्रमुख घटनाओं को दर्शाया गया है। 'रंग दे बसंती' फिल्म में आजादी के संघर्ष को संवेदनशील तरीके से दिखाया गया है। 'गोदान' में 1930 के समय के पूँजीपतियों के शोषण तथा किसानों की करुण जीवन–गाथा चित्रित है।

आधुनिक समाज श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों से दूर होता जा रहा है। इस दूरी को कम करने में फिल्मों की अहम भूमिका है। 'आँधी' और 'मौसम" फिल्में कमलेश्वर की साहित्यिक कृतियों पर आधारित हैं, तो शरतचंद्र चटर्जी के 'देवदास' उपन्यास पर हिंदी व बांग्ला सहित कई भाषाओं में अनेक सफल फिल्में बन चुकी हैं। फिल्मों के गीत भी सुख–दुख के साथी बन जाते हैं। वे व्यक्ति के एकाकीपन, निराशा, दुख आदि को कम करते हैं। स्वतंत्रता दिवस व गणतत्र दिवस पर 'ऐ मेरे वतन के लोगो' गीत को सुनकर लोगों में आज भी देशभक्ति का जज्बा जाग उठता है। विदाई के अवसर पर 'पी के घर आज प्यारी दुल्हनिया चली' गीत

सुनकर वधू पक्ष के लोग भावुक हो उठते हैं। हालाँकि फिल्मों के केवल सकारात्मक प्रभाव ही समाज पर पड़ते हैं, ऐसा नहीं है। आज के युग में युवा फिल्मों से अधिक गुमराह हो रहे हैं।

फिल्मों में अपराध करने के नए–नए तरीके दिखाए जाते हैं, जिनका अनुसरण युवा करते हैं। नित्य प्रति हत्या के नए तरीके देखने में आ रहे हैं। बच्चे इससे सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। वे झूठ बोलना, चोरी करना, घर से भागना आदि गलत आदतें प्रायः फिल्मों से ही सीखते हैं। नारी देह को प्रदर्शन की वस्तु फिल्मों ने ही बनाई है। लड़कियाँ मिनी स्कर्ट को आधुनिकता का पर्याय समझने लगी हैं तो लड़के फटी जींस व गले में स्कार्फ को आकर्षण का केंद्र मानते हैं। आजकल के फिल्म–निर्माता पैसा कमाने के लिए सस्ते गीतों पर अश्लील नृत्य करवाते हैं।

छोटे–छोटे बच्चों की जबान पर चालू भाषा के गीत होते हैं। आजकल गानों में भी भद्दी गालियों का प्रयोग बढ़ने लगा है। फिल्मों के शीर्षक 'कमीने' आदि बच्चों को गलत प्रवृत्ति की ओर अग्रसर करते हैं। फिल्मों के इस रूप की तुलना कैंसर से की जा सकती है। यह कैंसर धीरे–धीरे हमारे समाज के शरीर को जहरीला कर रहा है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि फिल्में समाज को तभी नयी दिशा दे सकती हैं जब वे कोरी व्यावसायिकता से ऊपर उठे तथा समाज की समस्याओं को सकारात्मक ढंग से अभिव्यक्त करें।

(स) वस्तुतः कंप्यूटर ऐसे यांत्रिक मस्तिष्कों का रूपात्मक और समन्वयात्मक योग है जो तेज गति से कम–से–कम समय में अधिक–से–अधिक काम कर सकता है। गणना करने में इसका कोई सानी नहीं है। अतः कंप्यूटर आधुनिक विज्ञान की सबसे बड़ी देन है। विज्ञान का प्रसार जिन–जिन क्षेत्रों में होता जा रहा है, उन–उन क्षेत्रों में कंप्यूटर की उपयोगिता, उसकी लोकप्रियता व आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है। कंप्यूटर जीवन के हर क्षेत्र में पहुँच गया है। उसके प्रभाव का इतना असर है कि कोई भी व्यक्ति, चाहे वह उच्च वर्ग का हो या साधारण वर्ग का, कंप्यूटर सीखने की इच्छा रखता है। इसकी बढ़ती उपयोगिता को देखते हुए सरकारें भी स्कूल व कॉलेज स्तर पर कंप्यूटर शिक्षा को अनिवार्य बना रही हैं।

आज रेल्वे स्टेशनों, बस अड्डों, हवाई अड्डों, कारखानों से लेकर शिक्षण संस्थाओं व अस्पतालों तक में कंप्यूटर ने अपनी जगह बना ली है। बैंकों के खातों के संचालन से लेकर पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा समाचार–पत्रों के प्रकाशन के क्षेत्र में कंप्यूटर ने क्रांति ला दी है। संचार के क्षेत्र में तो कंप्यूटर का एकछत्र राज है। टेलीफोन, मोबाइल सेवा आदि कंप्यूटर के बिना संभव नहीं हैं। इंटरनेट ने 'विश्व ग्राम' की अवधारणा को सच किया है। यह भी कंप्यूटर की बदौलत हुआ ही है। अंतरिक्ष से चित्र लेने तथा उनका विश्लेषण करने का काम भी कंप्यूटर ही करता है।

मौसम संबंधी घोषणाएँ कंप्यूटर की गणनाओं पर आधारित होती हैं। यहाँ तक कि ज्योतिष विद्या भी कंप्यूटर–आधारित हो गई है। मेडिकल क्षेत्र में कंप्यूटर जीवन–रक्षक कवच बनकर अवतरित हुआ है। यह विभिन्न तरह के परीक्षणों का विश्लेषण करके तुरंत मरीज की स्थिति बता देता है। शल्य–चिकित्सा में कंप्यूटर अह भूमिका निभाता है। आधुनिक विज्ञान की सबसे बड़ी उपलब्धि रोबोट को माना जाता है, क्योंकि यह आज जटिल से जटिल कार्य विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में सफलतापूर्वक संपन्न करता है। जैसे–वेलिंडग, पेंटिग, आयरन गलाना, परमाणु भट्ठी के पास काम करना, भारी सामान उठाना, कचरा साफ करना आदि।

यह सब कार्य रोबोट के मस्तिष्क में लगा छोटा–सा कंप्यूटर करता है। युद्ध में जासूसी करना, सही निशाने पर बम या मिसाइल फेंकना आदि कार्य भी कंप्यूटर आसानी से कर लेता है। साथ–साथ भवन–निर्माण, क्षेत्र–विकास, परिसर–नियोजन आदि के लिए शिल्पकार को अधिक समय लगता है। कंप्यूटर का डिजाइनिंग

प्रोग्राम क्षेत्र की लंबाई, चौड़ाई और आँकड़ों के अनुसार कुछ ही घंटों में नक्शा तैयार कर देता है। नए डिजाइन बनाने में तो यह कलाकार की भूमिका निभाता है।

कंप्यूटर के इतने फायदे देखकर कहा जा सकता है कि कंप्यूटर आज के युग की अनिवार्यता है। इसके बिना आधुनिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। इसके बावजूद यह एक मशीन है। इसका सदुपयोग या दुरुपयोग मानव की प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। इससे भी बढ़कर, यह मानव मस्तिष्क का पर्याय नहीं बन सकता क्योंकि इसे मानव ने ही बनाया है।

(द) दुनिया में अंग्रेजी भाषा का विस्तार और प्रचार–प्रसार बहुत ज्यादा व तेजी के साथ हो रहा है। इसका कारण अंग्रेजी भाषा की खूबी नहीं है। यह भाषाई साम्राज्यवाद है। साम्राज्यवाद यह प्रचार करता है कि अंग्रेजी ही ऐसी भाषा है जिसके बिना दुनिया का काम नहीं चल सकता. यह ज्ञान–विज्ञान के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय संवाद व संचार की भाषा है। आज अंग्रेजी न जानने वाला पिछड़ जाएगा भले ही वह कितना ही विद्वान क्यों न हो, आदि–आदि। 17वीं, 18वीं व 19वीं सदियों में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रसार के साथ अंग्रेजी भाषा का भी प्रसार हुआ। बीसवीं सदी से अमेरिका ने यह कार्यभार सँभाला। यह कार्य अमेरिकी साम्राज्यवाद को बढ़ाने–फैलाने के लिए किया गया। हालाँकि आज का साम्राज्यवाद पहले की तरह कार्य नहीं करता। पहले के साम्राज्यवादी देश अपने उपनिवेशों पर अपनी भाषा थोपकर अपने साम्राज्यवाद को सुदृढ़ बनाते थे। मैकाले भारत में एक ऐसा दुभाषिया वर्ग बनाना चाहता था जो रक्त और वर्ण से भारतीय हो, लेकिन रुचि, सोच व नैतिकता आदि से अंग्रेज हो। अब भाषाई साम्राज्यवाद का रूप बदल गया है। अब अमेरिका अंग्रेजी को सारी दुनिया पर थोपना चाहता है। यह कार्य परोक्ष रूप से किया जा रहा है; जैसे–रोजी–रोटी कमाने के लिए अंग्रेजी जानना अनिवार्य कर दिया गया है।

भाषाई साम्राज्यवाद का एक और रूप सामने आया है। अब वह दुनिया की दूसरी भाषाओं के माध्यम से भी साम्राज्यवाद को फैलाने व मजबूती से जमाने का कार्य करता है। आज का साम्राज्यवाद दूसरी भाषाओं में अपनी विचारधारा बेचता है और अन्य देशों की भाषा को उसने अनुवाद की भाषा बना दिया है। मौलिक चिंतन यूरोप या अमेरिका में होगा और दुनिया के बाकी देश अपनी भाषा में उसका अनुवाद करेंगे। उदाहरण के लिए संरचनावाद, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकवाद, विमर्श आदि सब कुछ बाहर की देन हैं। कुल मिलाकर भाषाई साम्राज्यवाद एक चुनौती है। उससे हमें संघर्ष करना है।

कुछ लोग लड़ाने के पुराने तरीके अपनाते हैं। वे 'अंग्रेजी हटाओ' का नारा देकर हिंदी को बैठाना चाहते हैं, इससे देश में अंग्रेजी भाषा या अन्य भाषाओं के लोग उनके विरोधी बन जाते हैं। वे इसे हिंदी का भाषाई साम्राज्यवाद कहने लगते हैं। साम्राज्यवाद से लड़ने के लिए राष्ट्रवाद जरूरी है, परंतु अब राष्ट्रवाद एक बेहतर दुनिया बनाने का संकल्प होना चाहिए। भाषाई साम्राज्यवाद के विरुद्ध जनतांत्रिक नारा है–दुनिया में सब हों समान, सब भाषाएँ बनें महान।

इसका अभिप्राय यह है कि भाषा किसी की बपौती नहीं होती। हर व्यक्ति किसी भी भाषा को सीख सकता है, उसमें दैनिक कार्य कर सकता है। किसी भाषा को दूसरी भाषाओं से श्रेष्ठ बताना और उसे दूसरों पर थोपना अमानवीय है।

8. **(क)** अभिव्यक्ति का अधिकार मनुष्य का एक मौलिक अधिकार है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति स्वतंत्र रूप से कर सकता है। निबंध विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। इसमें निबंधकार अपने विचारों को सहज रूप से अभिव्यक्त करता है। विचार अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया निबंधों के पुराने विषयों के साथ पूर्णतः घटित नहीं होती क्योंकि पुराने विषयों पर पहले से ही तैयार शुद्ध सामग्री अधिक मात्रा में उपलब्ध रहती है। इससे हमारी अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित नहीं होती। इसलिए हमें

निबंधों के नए विषय पर अपने विचार अभिव्यक्त करने चाहिए। नए विषयों पर विचार अभिव्यक्त करने से लेखक का मानसिक और आत्मिक विकास होता है। इससे लेखक की चिंतन शक्ति का विकास होता है। इससे लेखक को बौद्धिक विकास तथा अनेक विषयों की जानकारी होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिव्यक्ति के अधिकार में निबंधों के विषय बहुत सहायक सिद्ध होते हैं।

(ख) कहानी का मूल प्रेरणा बिन्दु उद्देश्य कहलाता है। उद्देश्य के रूप में कहानीकार कुछ भी अपना सकता है। समाज की किसी कुरीति, रूढ़ि, व्यक्ति की समस्या, जीवन समाज का व्यापक प्रश्न आदि भी कहानी के केन्द्रबिन्दु बन सकते है। उद्देश्य के अभाव में कहानी कहानी नहीं बन सकती। उद्देश्य के रूप में कहानी में संप्रेषण की क्षमता चाहिए। मानवीय मूल्यों को उजागर करना ही कहानी का उद्देश्य हो और उनकी रक्षा करने की प्ररेणा देना उनका संदेश हो।

(ग) रेडियो नाटक में ध्वनि और संवादों का विशेष महत्त्व है –

रेडियो नाटक में पात्रों से संबधित सभी जानकारियाँ संवादों के द्वारा उजागर होती हैं। पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं। नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता हे। इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहँचाया जाता है। संवादों के माध्सम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है। संवादों के द्वारा ही श्रोताओं का संदेश दिया जाता है।

9. **(क)** **1.** इंट्रो या मुखड़ा समाचार अथवा खबरें एक विशेष शैली में लिखी जाती हैं जिसके अंतर्गत सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्यों, सूचनाओं एवं जानकारी को सबसे पहले अर्थात् प्रारंभ के अनुच्छेद में लिखा जाता है । इस प्रकार प्रथम पैराग्राफ में दी जा रही जानकारी को इंट्रो या मुखड़ा कहा जाता है। इंट्रो में समाचार के संबंध में क्या कहाँ, कब और कौन से प्रश्नों के उत्तर देना आवश्यक होता है|

2. बॉडी या कलेवर समाचार के बाद दूसरे पैराग्राफ में कम महत्त्वपूर्ण जान्कारी, सूचना या तथ्यों को बताया जाता है, इसे बॉडी या समाचार का कलेवर कहा जाता है । समाचार के इस भाग में छः ककारों में से दो ककारों क्यों और कैसे का जवाब देने की कोशिश की जाती है।

3. समापन समाचार का समापन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि न केवल उस समाचार के प्रमुख तथ्य आ गए हैं, बल्कि समाचार के मुखड़े और समापन के बीच एक तारत्म्यता भी होनी चाहिए समाचार में तथ्यों तथा उसके विभिन्न पहलुओं को इस तरह से पेश करना चाहिए कि उससे पाठक को किसी निर्णय या निष्कर्ष पर पहुँचने में मदद मिले।

(ख) समाचार लिखने से पूर्व उसकी पृष्ठभूमि का ज्ञान आवश्यक है। समाचार प्राप्त होने के बाद उससे संबंधित अनेक पक्षों एवं तथ्यों को समाहित कर समग्रता के साथ लिखना अपेक्षित है । समाचार लेखन में चार 'सकारों' का ध्यान रखना अपेक्षित है, सत्यता समाचार सच्चाई पर आधारित होना चाहिए। स्पष्टता समाचार अपने अर्थ को सरलता से समझा सके । संक्षिप्तता समाचार को अति विस्तार से बचना चाहिए।

सुरुचि समाचार की भाषा, शैली एवं प्रस्तुति रोचक होनी चाहिए। –अनुच्छेद न तो अधिक बड़े तथा न ही अति संक्षिप्त या लघु होने चाहिए। एक अनुच्छेद में यथासंभव एक ही आयाम या पक्ष होना चाहिए।

समाचार में शब्दों की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए ।

(ग) **समाचार:** समाचार का कार्य पाठकों को सूचना देना होता है. इसका उद्देश्य पाठकों को ताज़ी घटना से अवगत कराना होता है. इसमें शब्द सीमा होती है।. इसमें लेखक के विचारों या कल्पनाके लिए कोई स्थान नहीं होता।. इसमें फोटो का होना अनिवार्य नहीं है।

फीचर: फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है। इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना खेल, शिक्षित करना, और मनोरंजनकरना होता है। इसमें शब्द सीमा नहीं होती। अच्छे फीचर 200 से 2000 तक शब्दोंके होते हैं। इसमें लेखक की कल्पना औरविचारों को भी स्थान मिलता है। अच्छे फीचर के साथ फोटो या ग्राफिक्स होना अनिवार्य है।

10. **(क)** कवि ने अपनी कल्पनाओं का एक संसार रचा है, – जिसमे प्रेम के अतिरिक्त किसी का अन्य भाव के लिए कोई स्थान शेष नहीं हो किन्तु जब कवि कल्पनाओं का रचे संसार को वैसा नहीं पता, जैसी उसने कल्पना की थी, वह उस संसार को मिटा कर फिर एक नए संसार की रचना में जुट जाता है।

(ख) लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम को जिस तरह विलाप करते दिखाया गया है, वह ईश्वरीय लीला की बजाय आम व्यक्ति का विलाप अधिक लगता है। राम ने अनेक ऐसी बातें कही हैं जो आम व्यक्ति ही कहता है, जैसे–यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पहले पता होता तो मैं तुम्हें अपने साथ नहीं लाता। मैं अयोध्या जाकर परिवारजनों को क्या मुँह दिखाऊँगा, माता को क्या जवाब दूँगा आदि। ये बातें ईश्वरीय व्यक्तित्व वाला नहीं कह सकता क्योंकि वह तो सब कुछ पहले से ही जानता है। उसे कार्यों का कारण व परिणाम भी पता होता है। वह इस तरह शोक भी नहीं व्यक्त करता। राम द्वारा लक्ष्मण के बिना खुद को अधूरा समझना आदि विचार भी आम व्यक्ति कर सकता है। इस तरह कवि ने राम को एक आम व्यक्ति की तरह प्रलाप करते हुए दिखाया है जो उसकी सच्ची मानवीय अनुभूति के अनुरूप ही है। हम इस बात से सहमत हैं कि यह विलाप राम की नर–लीला की अपेक्षा मानवीय अनुभूति अधिक है।

(ग) अपाहिज को जिस उद्देश्य से स्टूडियो लाया गया था किन्तु जब अपाहिज को रूलाने के सारे प्रयास विफल हो गए तो उस पर प्रयास करना इन्हें समय की बरबादी जान पड़ी ,इसलिए कैमरा मैन से कैमरा बंद करने के लिए कहा दिया गया –इतने समय में दूसरा कार्यक्रम बनाकर दिखाया जा सकता है। अपेक्षित परिणाम न मिलने पर उन्हें अपाहिज पर होनेवाला समय, समय की बरबादी लगाने लगा। इन्हें अपना समय तो महत्वपूर्ण जान पड़ता है किन्तु दूसरे की भावनाओं का कोई मूल्य नहीं

11. **(क)** खतरनाक स्थिति का सामना करने के बाद ये बच्चें और भी नई चुनौतियों का सामना करने में स्वयं को सक्षम मानने लगते हैं। इनमें और भी साहस व निडरता का भाव आ जाता है। इनका भय को दूर हो जाता हैं। चोट लगने से बच जाने पर चुनौती पूर्ण गति विधियों को करते हुए भयभीत नहीं होते है। बच्चे पहले से अधिक जोखिम पूर्ण गतिविधि करने के लिए तत्पर हो जाते है।

(ख) एक बच्चा जो आँगन में ठुनक रहा है। अनायास उसकी नज़र आकाश में चमक रहे चाँद पर पड़ जाती है – उसका मन उस चाँद पर ललचा गया है। जिद करना बच्चे का स्वाभाविक गुण होता है। वह जिदकर चाँद माँगने लगता है। माँ उसे दर्पण में बच्चे को बच्चे प्रतिबिम्ब दिखाते हुए कहती है कि देख, चाँद दर्पण में उतर आया है। इस तरह वह बच्चे को बहलाने का प्रयास करती है।

(ग) भोर के नभ को राख से लीपा हुआ चौका इसलिए कहा है, क्योंकि चौके को लीपने के बाद उसमे कुछ देर तक नमी रहती है, वातावरण में भी भोर के समय नमी होती है। चौके की वातावरण की नमी में साम्य स्थापित करने के लिए कवि ने भोर को राख से लीपा हुआ कहा है।

12. **(क)** 'गुड़धानी' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – गुड़ और धान से बना व्यंजन। अच्छी वर्षा होगी तो खूब धान और गन्ना होगा। गन्नें से गुड बनता है। धान और गुड से गुड़धानी बनेगी लेकिन यह तभी होगा जब खूब वर्षा होगी। इसीलिए बच्चे पानी के साथ गुड धानी की माँग करते हैं।

(ख) 'पहलवान की ढोलक' कहानी सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था के बदलने के साथ लोक–कला और कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की ओर संकेत करती है। राजा साहब के मरते ही नयी व्यवस्था ने जन्म लिया। नई व्यवस्था पुरानी व्यवस्था को समाप्त कर देती है। वही मैनेजर और राज पुरोहित उच्चवर्गीय व्यवस्था को रेखांकित करती है।

(ग) लेखक के अनुसार, दासता केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है, जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है।दूसरे कार्य का कौशल होने के उपरांत भी सिर्फ जाति विशेष का होने के कारण उसे पैतृक व्यवसाय के अतिरिक्त दूसरा कार्य न करने दिया जाये तो यह एक प्रकार की दासता है।

13. **(क)** भक्तिन झूंसी गाँव के एक गोपालक की इकलौती संतान थी। इसकी माता का देहांत हो गया था। भक्तिन की देखभाल विमाता ने की। पिता का उस पर अगाध स्नेह था। पाँच वर्ष की आयु में ही उसका विवाह हँड़िया गाँव के एक ग्वाले के सबसे छोटे पुत्र के साथ कर दिया गया। सौतेली माँ ने नौ वर्ष की आयु में उसका गौना कर उसे ससुराल पहुंचा दिया। विमाता ने सम्पति की रक्षा के लिए उसके पिता की बीमारी का समाचार तक उसके पास नहीं भेजा बल्कि पिता की मृत्यु का समाचार भेजा। सासू ने अपशकुन से बचने के लिए पिता की मृत्यु का समाचार छुपाया और बहाने से मायके भेजा, मायके से भक्तिन सौतेली माँ के अपमान से अपमानित होकर लौटती है।

(ख) 'खाली मन तथा भरी' जेब से लेखक का आशय है – मन में किसी निश्चित वस्तु खरीदने की इच्छा या वस्तु की आवश्यकता न होना। परंतु जब जेबें भरी हो तो व्यक्ति आकर्षक वस्तु के वशीभूत होकर अनावश्यक वस्तुएँ खरीद लेता है। बाजार का जादू भी लोगों ऐसे पर ही चलता है जो खाली मन तथा भरी जेब वाले होते है। ऐसे लोगों को अपनी जरूरत का पता ही नहीं होता। वे 'पर्चेजिंग पावर' को दिखाने के लिए अनावश्यक वस्तुएँ खरीदते हैं ताकि समाज में उनका रूतबा बढे। ऐसे व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान नहीं करते बल्कि बाज़ार का स्वरुप बिगाड़ते हैं।

(ग) द्विवेदीजी का मानना है कि कवि बनने के लिए अनासक्त ,फक्कड़ ,बेपरवाह और मस्त होना आवश्यक है। कबीर भी फक्कड़ थे, तुकबंदी करने से कोई कवि नहीं हो जाता –तुकबंदी तो कोई भी कर सकता है। कालिदास की तरह कालजयी रचना के सृजन के लिए अनासक्त और विदग्ध ह्रदय प्रेमी होना भी आवश्यक है। द्विवेदीजी कहते है कि जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए–कराए का लेखा–जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है ? लेखक कहते है कि कवि बनना है पहले तो फक्कड़ बनो।